नामसंकीर्तनयोग : खण्ड १

नामजप क्यों एवं कौनसा करें ?

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रण की १,००० प्रतियां एवं इस
लघुग्रन्थ की अब तक २७,३०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्म के प्रसार हेतु 'सनातन संस्था' की स्थापना !

२. 'गुरुकृपायोग' नामक साधनामार्ग के जनक !

३. हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

४. ग्रन्थ-रचना : मई २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९६ लाख ६९ सहस्र प्रतियां !

५. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियों की पीडाओं की उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध !

६. 'सनातन प्रभात' नियतकालिकों के संस्थापक-सम्पादक !

७. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें - 'www.Sanatan.org'.)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

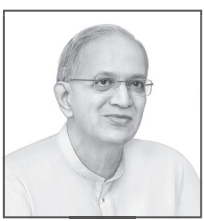

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥

– जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

डॉ. जयंत आठवलेजी की 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका' के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इन उपाधियों के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर एवं ग्रन्थ में आवश्यक स्थानों पर वैसा उल्लेख किया है ।

अनुक्रमणिका

(अध्यायों के कुछ विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए गए हैं ।)

अध्याय १. नामजप, मुद्रा एवं न्यास की प्राथमिक जानकारी १०

१ अ. 'नामजप' शब्द की व्याख्या १०

१ आ. नामजप का महत्त्व १०

१ इ. नामजप करते समय मुद्रा, न्यास करने का महत्त्व ११

अध्याय २. जिज्ञासुओं के लिए उपयुक्त २ नामजप १३

२ अ. पितृदोष से रक्षा हेतु भगवान दत्तात्रेय का नामजप १३

२ आ. आध्यात्मिक उन्नति हेतु किया जानेवाला नामजप १७

अध्याय ३. कौनसा नामजप नहीं करना चाहिए ? ४५

३ अ. गुरु के नाम का जप ४५

३ आ. सन्तों के नाम का जप ४७

अध्याय ४. नामजप से कष्ट अथवा हानि होना ५२

४ अ. नामजप से कभी-कभार कष्ट होने के कारण ५२

४ आ. नामजप से सम्भावित हानि ५५

卐 अनिष्ट शक्तियों के कष्ट का निवारण करने के लिए भी नामजप करना आवश्यक ! ५७

卐 'नामजप कौनसा करें ? (नामजप के कारण होनेवाले परिणामों के विवेचन सहित) ग्रन्थ के कुछ विषय ५९

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है।

भूमिका

सामान्यतः मनुष्य के जीवन में सुख अल्प एवं दुःख अधिक होता है । दुःख सहन करने की शक्ति भगवान के नामजप से मिलती है । भगवान 'सत्-चित्-आनंद'स्वरूप हैं, इसलिए उनके नाम का जप निरन्तर करने से जीवन आनन्दमय बनता है।

वर्तमान में सर्वत्र दिखाई देता है कि देवालय का कोई पुजारी बताए, तो लोग नामजप करने लगते हैं । किसी पोथी में बताया हुआ नामजप करनेवाले भी होते हैं । प्रसारमाध्यमों में प्रसारित जानकारी पढकर अथवा सुनकर भी कुछ लोग वह नामजप करते हैं । गुरु अथवा सन्त द्वारा कोई नामजप बताया गया हो, तो वह करना सर्वाधिक उचित है । अन्य नामजप करना स्वयं के मनानुसार करने के समान है । 'स्वयं के मनानुसार साधना करना' अध्यात्म की बडी चूक है । यदि गुरु अथवा सन्त ने बताया न हो, तो कौन-सा नामजप करना उचित है ? हमारा जन्म जिस कुल में होता है, उस कुल की कुलदेवी अथवा कुलदेव का नामजप करना साधना के प्रारम्भिक काल में अधिक उचित है ।

वर्तमान में अनेक लोग श्राद्ध, पक्ष आदि तथा साधना भी नहीं करते । इसलिए उन्हें अतृप्त पूर्वजों का कष्ट हो सकता है, उदा. व्यसनाधीन होना, विवाह न होना, पति-पत्नी में अनबन, गर्भधारण न होना, गर्भपात होना । अतृप्त पूर्वजों के कष्टों से रक्षा होने हेतु 'श्री गुरुदेव दत्त' नामजप करना आवश्यक है ।

कुलदेवता एवं भगवान दत्तात्रय के नामजपों का महत्त्व, ये नामजप कितनी संख्या में करने चाहिए, ये जप प्रभावकारी होने के लिए किए जानेवाले अन्य उपाय, नामजप करने से होनेवाली अनुभूतियां आदि की विस्तृत जानकारी इस लघुग्रन्थ में दी है ।

'इस लघुग्रन्थ में दिए अनुसार नामजप-साधना कर सभी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति कर लें', ऐसी श्री गुरुदेवजी के चरणों में प्रार्थना है ।' – **संकलनकर्ता**

माया के प्रति आकर्षण कम करने के लिए नाम जपना आवश्यक है ! – **प.पू. भक्तराज महाराज**